Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 2 | February 2025



छत्तीसगढ़ राज्य में कृषि की भूमिका

डॉ. श्रीमती सुनीता साहू

अतिथि व्याख्याता अर्थशास्त्र, मोहनलाल जैन शासकीय, महा. खुर्सीपार भिलाई, जिला–दुर्ग, छ.ग.

भूमिका

छत्तीसगढ़ मुख्य रूप से कृषि प्रधान राज्य है जिसकी अर्थव्यवस्था और रोजगार में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। राज्य की 70: से अधिक आबादी कृषि में लगी हुई है। छत्तीसगढ में कृषि राज्य के सकल घरेलु उत्पाद में लगभग 25 प्रतिशत योगदान देती है। राज्य का कुल खेती योग्य क्षेत्र 4.78 मिलियन हेक्टेयर है जो इसके कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 35 प्रतिशत शुद्व सिंचित क्षेत्र खेती योग्य क्षेत्र का 23 प्रतिशत है जिसमें लाल और पीली मिटटी प्रमुख प्रकार की मिटटी है। छत्तीसगढ में उगाई जाने वाली प्रमुख फसले चांवल, गेहूॅ, बाजरा, दालें और तिलहन है। चांवल राज्य की प्रमुख फसल है और 70 प्रतिशत से अधिक खेती योग्य क्षेत्र में उगाया जाता है लगभग 20 प्रतिशत खेती योग्य क्षेत्र पर रबी फसल रूप में उगाया जाता है बाजरा, दलहन और तिलहन भी महत्वपूर्ण फसले है और छोटे क्षेत्रों में उगाई जाती है। आर्थिक समीक्षा 2023–24 से कृषि क्षेत्र का विकास दर 1.4 प्रतिशत एवं औसत वार्षिक वृद्वि दर 4.18 प्रतिशत रही है। छत्तीसगढ़ में कृषि को जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी और मिट्टी के क्षरण सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, हालाकि राज्य सरकार इन चुनौतियों से निपटने और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रही है।

उद्देश्यः

- अध्ययन का उद्देश्य छ.ग. राज्य में प्रमुख फसलों के उत्पादन क्षेत्र एवं उत्पादन स्तर की जानकारी प्राप्त करना।
- कृषि विकास में सिंचाई स्त्रोतों एवं सिंचाई क्षमता की जानकारी प्राप्त करना।
- फसल क्षेत्र का सकल राज्य घरेलु उत्पाद में भागीदारी ज्ञात करना।
- कृषि क्षेत्र के विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन पद्वतिः अध्ययन हेतु द्वितीय समकों का प्रयोग किया गया है।

छत्तीसगढ़ राज्य की प्रमुख फसलों का क्षेत्रफलः

छ.ग. में कृषक विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती में संलग्न है जो राज्य के कृषि परिदृश्य में योगदान करते है इन फसलो में चांवल मुख्य स्थान पर है जो कृषि क्षेत्र के 68.8 प्रतिशत हिस्से पर बोया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य प्रमुख फसलो में तिवरा 6.5 प्रतिशत चना 4.6 प्रतिशत धान 2.6 प्रतिशत कोदो कुटकी 2.3 प्रतिशत और गेहूॅ 1.9 प्रतिशत शामिल है।

इन प्रमुख फसलो के अलावा छत्तीसगढ़ के किसान मक्का, उडद, राइजर, सोयाबिन, अरहर, सरसों, कुलथी, अलसी, मूगंफली, तिल, मसूर, मटर, मूंग, ज्वार, सूरजमुखी की खेती के लिए भी अपना श्रम समर्पित करते है कुल्थी और कुसुम यद्यपि छोटे अनुपात में बोया जाता है।यह विधिवत फसल पोटेफोलियों राज्य की कृषि समृद्वि और उत्पादकता को बताता है, जो इसकी अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

छत्तीसगढ़ राज्य की प्रमुख फसलों की उत्पादनः छत्तीसगढ़ राज्य की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। प्रदेश की 40. 10 लाख कृषक परिवारों में से 82 प्रतिशत लघु एवं सीमांत कृषक की श्रेणी में आते है। राज्य की प्रमुख फसलों को दो भागों में बांटा गया है। खरीफ फसल एवं रबी फसल–

तालिका कमांक 1 प्रमुख फसल उत्पादन (000 मे. टन)

कं.	फसल	2021 पूर्ति	2022 पूर्ति	वृद्वि / कमी प्रतिशत
खरीफ				
1	धान चांवल	8347.99	10026.22	20
2	मक्का	619.72	337.54	–46
3	अरहर	62.19	93.27	50
4	मूग	5.53	4.66	–16
5	उड़द	50.39	46.77	–7
6	मूंगफली	59.42	64.31	8
7	सोयाबीन	28.96	38.08	31
8	रामतिल	9.79	5.81	–41
9	अन्य	82.35	48.05	–42
कं.	फसल	2021–22	2022–23	वृद्वि / कमी प्रतिशत
रबी				
1	ग्रीष्म धान चांवल	698.72	570.72	–18
2	मक्का	408.14	237.53	–42
3	गेहूॅ	274.88	317.19	15
4	चना	277.40	312.18	13
5	मटर	17.80	21.89	23
6	तिवड़ा	108.55	107.18	–1
7	राई–सरसों	73.86	90.88	23
8	अलसी	13.27	13.94	5

9	गन्ना एवं अन्य	352.08	370.78	5
स्त्रोतः संचालनालय कृषि, छत्तीसगढ़				

सिंचाई क्षेत्र विस्तारः

कृषि विकास में सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में समस्त सिंचाई स्त्रोत से 36ः सिंचाई क्षमता है। राज्य शासन द्वारा प्रदेश के लघु सीमांत कृषकों को सिंचाई कूप एवं पंप स्थापना हेतु शाकम्भरी योजना प्रारंभ की गई है।इसके अतिरिक्त पूर्व से संचालित लघु सिंचाई नलकूप योजना में देय अनुदान राशि में वृद्वि की गई है। सिंचाई जल के बेहतर उपयोग एवं नगदी फसलों को बढ़ावा देने के उददेश्य से सूक्ष्म सिंचाई अंतर्गत सभी वर्ग के लघु सीमांत कृषकों को स्प्रिंकलर पर 70 प्रतिशत (33प्रतिशत केन्द्रांश + 37 प्रतिशत राज्यांश) अनुदान दिया जा रहा है।

तालिका कमांक 2 सिंचाई क्षेत्र विस्तार योजना प्रगति

कं.	विवरण		2022–23 पूर्ति	2023–24 लक्ष्य		2023–24 पूर्ति	
				संख्या	सिंचाई क्षमता (हे.)	संख्या	सिंचाई क्षमता (हे.)
1.	किसान समृद्वि योजना/लघु सिंचाई नलकूप योजना		1316	1415	1132	125	100
2.	लक्षुत्तम सिचाई तालाब योजना		70	100	3500	44 निर्माणाधीन	1540
3.	टारगेटिंग राईस फेलो एरिया	चेकडेम	–	–	–	–	–
4.	शाकम्भरी योजना	कूप	168	180	72	15	–
		पंप	8613	15588	–	950	–

आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24

फसल क्षेत्र का सकल राज्य घरेलु उत्पादः फसल क्षेत्र का सकल राज्य घरेलु उत्पाद में महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई है। जिसका विवरण तालिका में दिखाया गया है।

तालिका कमांक 3 फसल क्षेत्र का सकल राज्य घरेलु उत्पाद में भागीदारी का विवरण (स्थिर भाव 2011–12)

संख्यिकी	2018–19	2019–20	2020–21	2021–22 (P)	2022–23 (Q)	2023–24(A)
योगदान (लाख रू.)	2279945	232058	2421613	2454833	2557944	2612897
वृद्वि (प्रतिशत)	14.31	1.89	4.24	1.37	4.20	2.15
योगदान (प्रतिशत)	10.23	9.87	10.18	9.23	8.98	8.64

स्त्रोतः आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न योजनाऐंः

- **राज्य में जैविक खेती को बढ़ावाः** राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 2014 से राज्य पोषित जैविक खेती मिशन एवं वर्ष 2016 से केन्द्र प्रवर्तित पंरपरागत कृषि विकास योजना संचालित है। पूर्व में योजनाओं का क्रियान्वयन 05 जिलों में शुरू किया गया। वर्तमान में इन योजनाओं का विस्तार समस्त जिलों में करते हुए 05 जिले गरियाबंद, बीजापुर, सुकमा, दंतेवाडा एवं नारायणपुर को पूर्ण जैविक जिला एवं शेष 22 जिलों के एक–एक विकासखंड को पूर्ण जैविक बनाने हेतु कार्यक्रम संचालित है। इसके अतिरिक्त नवीन जिले सक्ती को छोड़कर शेष सभी नवीन जिलों में योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। जैविक खेती मिशन के अंतर्गत वर्ष वर्ष 2021–22 में जैविक खेती मिशन का 15000 एकड़ में तथा परंपरागत कृषि विकास योजना का 52500 एकड़ में क्रियान्वयन कर कुल 67500 एकड़ क्षेत्र में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्ष 2022–23 में जैविक खेती मिशन में 15000 एकड़ में तथा परंपरागत कृषि विकास में 1000 हेक्टेयर फसल प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। वर्ष 2023–24 मे जैविक खेती मिशन अंतर्गत 15000 एकड़ एवं परंपरागत कृषि विकास योजना अंतर्गत 31500 हेक्टेयर, वृहद क्षेत्र प्रमाणिकरण एल.ए.सी. योजनान्तर्गत 50279.29 हेक्टेयर में किया जा रहा है।
- **जैविक फसलेंः** राज्य में धान की सुगंधित किस्मे–बासमती, बादशाहभोग, दुबराज, पुसासुगंध, जंवाफूल, मोतीचूर, जीराफूल, तुलसी–मंजरी, काली काली कमोद, लोक्टीमांछी, कालीगिलास, तिलकस्तुरी, मक्का एवं लघु धान्य फसलें– कोदो–कुटकी, रागी, सांवा, कोसरा आदि एवं दलहन–तिलहन फसलें – अरहर, उड़द, मूंग, कुल्थी, तिल आदि की जैविक खेती की जा रही है।
- **FPO के गठनः** जिलों में FPO के गठन को प्रोत्साहित कर उत्पादों का विपणन किया जा रहा है।
- **राज्य में जैविक ब्राण्डः** राज्य के विभिन्न जिलों में जैविक उत्पादों का ब्रांडिंग कर विपणन किया जा रहा है। चांग्रो राईस, जिला–बलरामपुर, आदिम ब्रांड, पंचतत्व जिला– दंतेवाड़ा, बांसाझाल राईस, महामाया जिला –सरगुजा, बस्तर नेचूरल जिला–बस्तर, मैकल्स नेचर जिला – कबीरधाम, कैलो ब्रांड, जिला –रायगढ़, अगद जैव उत्पाद जिला–मुंगेली, शिवनाथ आर्गेनिक जिला–दुर्ग, आरूग जैविक जिला – राजनांदगांव, रायपुर आर्गेनिक्स जिला – रायपुर, रूद्र आर्गेनिक जिला – धमतरी, बालोद आर्गेनिक जिला– बालोद, पंचतत्व जिला – कोण्डागांव, जशपुर एग्रोफेश, जिला – जशपुर में विपणन का कार्य किया जा रहा है।
- **प्रधानमंत्री कृशि सिंचाई योजनाः** भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015–16 से प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का संचालन किया जा रहा है। वर्षा जल संग्रहण, संचयन, सिंचाई स्त्रोातें के विकास, भू–जलवर्धन तथा उपलब्ध जल के दक्षतापूर्ण उपयोग की महत्वपूर्ण योजना है। योजनांतर्गत पांत्र वर्षो के लिए कुल राशि रू. 54,931.71 करोड़ की परियोजना स्वीकृत है जिससे प्रदेश का 25,94,284 हेक्टेयर अतिरिक्त रकबा सिंचित किया जाना प्रस्तावित है। विगत तीन वर्षो में योजना के विभिन्न घटकों के अंतर्गत किये गये कार्यो की जानकारी निम्नानुसार हैः–

- **PMKSY-PER DROP MORE CROP (MICRO IRRIGATION):** प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजनांतर्गत जल के प्रत्येक बूंद से अधिक फसल लेने के उद्देश्य से स्प्रिंकलर/ड्रिप (टपक सिंचाई) सिंचाई को प्रोत्साहित करते हुए वर्ष 2022–23 में 23885.47 हे. क्षेत्र में ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिस्टम स्थापित किये गये है।
- **प्रधानमंत्री कृशि सिंचाई योजनाः** जलग्रहण क्षेत्र विकास घटक 2.0 (WDC-PMKSY-2.0) कम सिंचाई संसाधन वाले क्षेत्रों में जल संरक्षण एवं संवर्धन के विभिन्न कार्यो जैसे–चेकडेम, परकोलेशन टैंक, फार्म पौण्ड/डबरी, कुंआ एवं अन्य संरचनाओं के निर्माण किया जाता है।
- **रेनफेड एरिया डेव्हलपमेंट (RAD):** नेशनल मिशन फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर (NMSA) के घटक रेनफेड एरिया डेव्हलपमेंट (RAD):– का कियान्वयन वर्ष 2014–15 से भारत सरकार द्वारा जारी दिशा–निर्देश के अनुरूप किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य वर्षा आधारित क्षेत्रों में एकीकृत फसल पद्वति के माध्यम से कृषि को उत्पादकता वर्धक, टिकाऊ, लाभकारी एवं जलवायु के अनुकूल बनाना है।
- **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनाः** प्रदेश में कृषकों की फसलों के बीमा हेतु खरीफ वर्ष 2016 से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की गई जिसमें क्षत्रिपूर्ति हेतु पात्रता के मापदण्ड इस प्रकार हैः
  - बाधित/बोआई/रोपण/अंकुरण नही हो पाने से होने वाली नुकसान से सुरक्षा प्रदान करेगा।
  - स्थानीयकृत आपदाओं के अंतर्गत होने वाली क्षति की स्थिति में।
  - फसल कटाई के उपरांत खेत में सुखाने के लिए फैलाकर रखी हुई करपा फसल में नुकसान होन की स्थिति में फसल पैदावार के आधार पर व्यापक क्षति की स्थिति में।
- **कृषि यांत्रिकीकरणः** विभिन्न कृषि कार्यो के सुगमतापूर्वक एवं उचित समय पर पूर्ण कर उत्पादन में वृद्वि तथा प्रदेश के लघु सीमांत कृषकों को किराये पर उन्नत कृषि यंत्र उपलब्ध कराने के साथ ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कृषि यंत्र सेवा केन्द्र की स्थापना/फार्म मशीनरी बैंकों की स्थापना संचालित की जा रही है राज्य में अब तक 3473 कृषि यंत्र सेवा केन्द्रों की स्थापना की जा चुकी है।
- **आधार/प्रमाणित बीज उत्पादन एवं वितरणः** प्रदेश में किसानों को उच्च गुणवत्तायुक्त, अधिक उत्पादन देने वाले प्रमाणित बीज की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु राज्य शासन द्वारा विशेष प्रयास किये गये है। प्रमाणित बीज का उपयोग कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता वृद्वि का प्रमुख आधार है। राज्य पोषित/केन्द्र प्रवर्तित योजना अंतर्गत आधार/प्रमाणित बीज उत्पादन एवं वितरण पर रू. 500 से लेकर 2500 तक अनुदान देने का प्रावधान है।
- **उर्वरक एवं जैविक खाद वितरणः** कृषि मे फसल उत्पादन एवं उर्वरक क्षमता को बढ़ाने के लिए उर्वरक एवं जैविक खाद का वितरण राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है।

निष्कर्षः

उपरोक्त अध्ययन के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है, कि कृषि क्षेत्र में प्रमुख फसलों के अन्तर्गत छ.ग. राज्य में चांवल का उत्पादन क्षेत्र एवं उत्पादन का स्तर अधिक है कृषि विकास में सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान है राज्य सरकार द्वारा किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त बीज का वितरण किया जा रहे जिसे कृषि उत्पादन में वृद्वि हो रही है। राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाऐं सरकार के द्वारा चलायी जा रही है। छ.ग. में कृषि क्षेत्र में नई तकनीकी के प्रयोग के लिए कृषि अनुसंधान का प्रयोग कर रही है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा डॉ. भूमिका (2025)– "अर्थशास्त्र" माइलस्टोन पब्लिकेशन 86 ए सुन्दर नगर रायपुर छ.ग., पेज नं. 206।
2. मिश्रा डॉ. जे.पी. (2024)– "अर्थशास्त्र की समान्य जानकारी" साहित्य नव पब्लिकेशन्स हास्पीटल रोड़ आगरा पेज नं. 190–1921।
3. पटेल हरिराम (2023–24)– "छत्तीसगढ़ विशिष्ट अध्ययन" हरिराम पटेल हाऊस नं. 70/2 रोहनापाली अमलीपाली रायगढ़ छ.ग. पेज नं. 168।
4. ओझा प्रो.बी.एल. एवं ओझा मनोज कुमार (2025) – "भारतीय अर्थव्यवस्था की समान्य जानकारी" एस बी.पी.डी.पब्लिकेशन्स आगरा पेज नं. 82।
5. राज्य सरकार आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21 से 2023–24 तक।
6. मामोरिया डॉ. चतुर्भुज (2018) – "भारतीय अर्थव्यवस्था" एस बी.पी. डी.पब्लिकेशन्स आगरा पेज नं. 266।
7. मामोरिया डॉ. चतुर्भुज एवं मिश्रा डॉ जे.पी. (1960)– "भारतीय अर्थव्यवस्था" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स़ आगरा पेज नं.179।
8. कृषि एवं संबद्व सेवाएं 2023–24
9. https//descg.gov.in/economic- survey.aspx
10. https//testbook.com
11. छ.ग. शासन योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग रायपुर
12. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय रायपुर